

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्रमांक

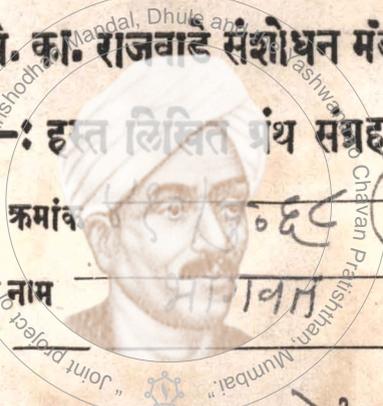
७६८ (५२९)

ग्रंथ नाम

सातावात

विषय

कथा पुराणे



Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and Chavan Pratishthan, Mumbai.

मराठी

एकनाथ चतुःश्लोकी शतवत



नाथ मुना पाठ
चा फक्त

तगवत

ॐ नमो श्रीसचीदानंदाय नमः ॥ आदीचंद्रंग एनायका ॥ न
रकंजरा अलौलीका ॥ नरगतश्चतुंयेकरूपा ॥ मनश्रीचि न
नाएका ॥ सद्गुरुकरूपा ॥ १ ॥ तुजसभदावेकरीतां नमन ॥ चि
घ्नचिहोएनिधिघ्न ॥ यापरिदुशीदुपापुली ॥ चैतन्यघनग
रा राजा ॥ २ ॥ साचंचैतनसत्त्ववरि ॥ हंसारूढपरमेश्वरी ॥
सद्गुरुकरूपेवागेश्वरी ॥ ३ ॥ राजमाशोरिवंदीलि ॥ ३ ॥ वा
चावचनवंदीता ॥ तिहीसीआश्रीएकात्मता ॥ यापरीवा
ग्देवता ॥ गुरुत्वंतत्वतावंदीलि ॥ ४ ॥ पूर्वपरंपरापुज्य
तां ॥ एकरूपेएकनाथा ॥ आत्मांसद्गुरुचिकुव्वदेवता ॥

1A

लल्लाहीं दिव्य कृपि वच्चा ॥ अपादमिर च वनमाच्छा ॥ वैजयंतिर
 ल्लेगच्छां ॥ घनश्यामलीका घवघवितु ॥ ८८ ॥ त्याचि वर्णा विसुंद
 रता ॥ तव तेषा चले हरी चिस्वरुपता ॥ त्याहो नियां सुंदर तव आतां ॥
 बोलु बोलतां ॥ सलुज ॥ ८९ ॥ नवल त्याचि सकुमारता ॥ चंद्रकर
 रूप तिलागतां ॥ सजे माडिनी जातातां ॥ गगनाचि शुन्यतासले
 र्यासी ॥ ९० ॥ त्याचि अंग प्रसा ॥ गजो नियां हार पेउसा ॥ ज्याची सु
 या ओरो प्रसा ॥ निज ते जे सा ॥ हीरक प्रसा प्रकाशु ॥ ९१ ॥ ऐसे
 सुंदर आपिस कुमार ॥ नीज सजनें सग चतुर ॥ वैकंठि वस
 ति अपार ॥ हरीकीं कर विमानरुद ॥ ९२ ॥ पुण चंद्र प्रसा समा
 न ॥ नीज पुणें शब्द के विमान ॥ ऐसे विमानि बैसो निजाण ॥ हरी
 परत आपण ॥ त्रिडति स्वये ॥ ९३ ॥ शुध सतें सत सयुन ॥

सु

2

दानुलंघीतिपतिचं वचन ॥ जे निर्विकल्पपतिव्रतापुरागीती
 सिनीवासस्थानवैकुण्ठ ॥ ९४ ॥ जेपतिपुत्राआणिअतीता ॥ फो
 जनीनेदखेसीनता ॥ जेधनलोपंविणपतिव्रता ॥ तेजाणात
 त्वतावैकुण्ठवासी ॥ ९५ ॥ जेपतितंमानिनाराणा ॥ जेकोपहाच
 नेदखेअवगुणा ॥ जेनिमोदपतिव्रतापुरा ॥ तिसीनिवासस्था
 नवैकुण्ठ ॥ ९६ ॥ ज्यांसीनिवासस्थानवैकुण्ठ ॥ त्यांचिस्त्रियांचंवर्ण
 णा ॥ श्रीशुकसांगतसेआपणा ॥ समाग्यपरातयांचं ॥ ९७ ॥ भ्लोक ॥ १०
 विद्यातमानप्रमदोतमाद्युक्तिः सचिद्वक्त्रावलीपीर्यथानमः ॥
 श्रीर्यत्ररूपीपयुरुगायपादयो करोतिमानबद्धाविभूतिभिः ॥ १० ॥
 टीका ॥ ज्यापरमपुण्यअतिपावन ॥ सास्त्रियावैकुण्ठिविराज
 मान ॥ सांदयैविद्येखुमान ॥ त्यांचेनतेजेविमानशासतकैसे ॥ ९८ ॥

५९

१०

28

वैकुण्ठनन्देते शृङ्गगगन ॥ मेघरुखा निगमे विमान ॥ तेषं चि हूल
 तास्त्रीया ज्ञाणा ॥ सौंदर्यसंपूर्णोऽथ कवितेजो ॥ ९९ ॥ अतिला व
 एयस्त्रीया कविदीसे ॥ तेषं स्वयं स्वरुपे लक्ष्मिवसे ॥ तद्वपस्त्रीया
 सौंदर्यभासे ॥ यापरीशोपतुसे वैकुण्ठलोक ॥ १०० ॥ लक्ष्मिसौअ
 तिशये सीलावण्य ॥ याचया हं तिकारणा ॥ स्प्रेमसे विहरी चर
 णा ॥ यालागिशोभायमानो तसौंदर्यो ॥ इतरां ठायिलक्ष्मिदि
 से ॥ तै अश्वर्ययोगे आपासे ॥ तेनाजरुपे वैकुण्ठि वसे ॥ यालागि
 शोपतुसे वैकुण्ठलोक ॥ राजरासुखहोए निजजीवा ॥ ऐसीगो
 डहरिचीसेवा ॥ मेळउनिउत्तमवेषवा ॥ रमासभ्दावाहरीच
 रणासेचि ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ प्रेखश्रीतायाकसूमाकराचुरोचिगि
 यमाना प्रीयकर्मगाइति ॥ तदशैतत्राखिसोत्वतायतिश्रीयः ॥

3

पतियज्ञपतीजगत्यतिः॥११॥टीका॥शृंगारवाडिमाजिडोल्हारा
 लांबुनियांसुवर्णसूत्रा॥लक्ष्मिनिजपाचंनिजवरा॥नानोप
 चारस्यप्रेमसजे॥४॥शृंगारवाडीचंवन॥वसतंशृंगारिलेंस्यं
 पूर्ण॥परागउधच्छतस्यूरसान॥तणोंबासंगगन॥सूवासित
 जालें॥५॥मंदमंदसुगीतक॥ढालेंशुळकेमळीया निळ॥पंच
 मकुंजतिकोकीळ॥झांकारआळोउळ॥गुंजारवंप्रमति॥६॥
 कुंकुमकेशरिकस्तुरिरोळ॥एकवाहकदेसुकेला॥गंधचंद
 नाचाउधळा॥नानासूमनसळासुवासितु॥७॥चंद्रकांतचंसी
 तळनिर॥शृङ्गसूमनीचेविचित्रहार॥हंसरुत्राहादिलेंस
 जार॥त्यावरीयेरुवारशतपत्रांचं॥जाणेंसीदेखोनिसेजम
 नोहर॥संतोषंपद्दुडलाश्रीधर॥तेथं डोल्हारेयाचादोर

20

20

अत्यंतस्थिरहालचिरमा ॥६॥ तेद्यं हरीगुणचरित्र ॥ शुकबोलति
 विचीत्र ॥ हरीखं कुंडलमयोर ॥ जेकविश्वरगर्जतीनामं ॥ १० ॥ को
 कीळांचेपंचस्वर ॥ जैसेसामगायनगंभीर ॥ मधूरस्रमरांचेप्र
 णाकार ॥ सारंगधरगुणचरिति ॥ ११ ॥ ऐसंहरीगुण ॥ रमाजा
 लीस्वानंदपूणी ॥ तेहीसंतोषानआपणा ॥ अगाड्याचेगुणला
 गतिगाउं ॥ १२ ॥ आयिकतांहरीगुणकीति ॥ ज्यासिउत्तासनुपले
 चीति ॥ तोपरमअसाग्यत्रिभुगति ॥ जाणपरीक्षीतिनीश्रीत ॥
 ॥ १३ ॥ आयिकोनीस्रमरांचेकीतेन ॥ रमासंतोषलीसंपूर्ण ॥ तेपे
 संतोषेआपणा ॥ पावनहरिगुणस्वरंगाति ॥ १४ ॥ मिहरीचेनि
 लीनीजआधीग ॥ ह्यणोपरीनेसतीअंगसंग ॥ संगनाहिल्लण
 तांश्रीरंग ॥ व्यापुनिसर्वांगवर्तविमाते ॥ १५ ॥ मासंलावपयेगुण

4

समर्थपण ॥ रमा आणिरमार मण ॥ हे अवघे ही श्री नाराण ॥
मा सें ही जें मिं पण ॥ तें त्याचे निवर्त ॥ १६ ॥ त्या तें मीं मानिं आ पुला
कांतु ॥ त वं मिं पण नुरे ज्या आंतु ॥ मज सखा स्व श्री पण वंतु ॥ अ
से वर्ततु निजानंद ॥ १७ ॥ आता त्याचि कीर्ति गो वि कैसी ॥ त वं वा
च्य वाच कुरु प्रिकेशी ॥ या स्थिति वरी तां कीर्ति ना सि ॥ कीर्ति वं तां
सि निजला मृ ॥ १८ ॥ देवा तु सर्व मृतनी वासी ॥ ह्मण तां मृतमा
त्रा ना त व्यसी ॥ मृतं मृता ल तुं हो सी ॥ नमो रू प्रिकेशी ॥ पर
मात्म यां ॥ १९ ॥ नमो आदि पुरुषा अव्यक्ता ॥ सच्चिदानंद गुणा
तिता ॥ विश्वात्म का स दोदिता ॥ नमो अच्युताः अव्यया ॥ २० ॥
तु यो गि जना आगो चरु ॥ वेद शास्त्रान कं छे पारु ॥ तो तुं मं जे
ला गि छु पा करु ॥ हि धला चरण रू ॥ निज सेवा ॥ २१ ॥ हरी

२१

२१

4A

चरणसेवे परता ॥ बावो नाहिं परमार्थो ॥ मिथ्या मोक्षसायुज्यता ॥
 हाणो तिलाता हरीपक्त ॥ २३ ॥ हा तिं जो डल्यां हरीचरण ॥ पक्तां नाहिं
 जन्म मरण ॥ या परता परमार्थकोण ॥ अपाग्य जन्म मनीति ॥ २३ ॥
 धीजलें विघ्नरलें तु पदेरु ॥ तें संसर्गु लो निर्गुण दो नो एक ॥ हे स्व
 ये जाणति हरीसेवक ॥ सदा नास्ति वषट्वाद्यां ॥ २४ ॥ सर्वपूति
 वासूदेवो ॥ स्वतसी दुःखसतां फल ॥ हा पदवाद्यां तु पजे सावो ॥
 हृदयस्वदेवो दुःखा विलास्यं ॥ २५ ॥ पदवादी अपदवादि ॥ वं
 दी अथवा जो कां नीदि ॥ ते प्रगवदपत्रिस्थी ॥ हे सेवे विविधी
 अनन्यपक्तां ॥ २६ ॥ सावें हरीपूक्ति करीतां ॥ पदी प्रगट अपद
 ता ॥ पक्तां सिनियुक्तता ॥ सावें पदतां हरीचरणी ॥ २७ ॥ सा
 नाप्यासी विषयो त्या गिति ॥ त्या गितां ते अति दुःख पावति ॥ पक्त

न

विषयो मग वंति अर्पिती ॥ ते क्वांचिते होति नित्यमुक्त ॥ २८ ॥ ए
सं उल्हा सं र मा बोल पु ए ॥ मा सा खा मिं स ह रु नारा ए ए ॥ या च
स भ्दा वं से वितो च र ए ॥ स्वयं ब्रह्म ज्ञान पायां लो गो ॥ २९ ॥ या प री
र मा आ प ए ॥ आ नं दें ग ये ह रि चै रु ए ॥ हे हि करा व या गु ए व ए
न ॥ र मार म ए वा चा व ट वि ॥ ३० ॥ सां ड नियां अ हं म ति ॥ र मा क
री सा चार स्त ति ॥ दे वो स तो प ला नि जो स खि ति ॥ या ला गि श्री प
तो बो ली जे या तें ॥ ३१ ॥ श्री ये नि ज नि ज खि ति ॥ ती सी चा श्री हा चि
न्या त्र शक्ति ॥ या ला गि या तें श्री प ती ॥ वे द शा स्त्रा र्थि बो ली जे ॥ ३२ ॥
न म ग तां म क्ति चि आ ति ॥ नी वा रि नी जां गें ह्य पा मु ति ॥ या ला गि
या तें म क्त प ति ॥ स ज्ञान बो ल ति स भ्दा वं ॥ ३३ ॥ या डी कु या गु
हो ए करी ता ॥ कल्प ने सारी खा हा फ ष्ट दा ता ॥ या ला गि य ज्ञ

5

२२

२२

पती तत्वता ॥ होए बोलता श्रीव्यासु ॥ ३४ ॥ जग शृङ्गु निप्रतीपाञ्चि
ता ॥ सेरवीं उदरिं सामाविता ॥ ए वही सता श्रीसगवंता ॥ याल्ना
गित त्वता जगत्पति होए ॥ ३५ ॥ असामक्तपति श्रीपति ॥ यज्ञपती
जगत्पति ॥ वैकंठराज वैकंठपति ॥ देव प्रजापति टवकारना ॥ ३६ ॥
मागां बोलिले फेगव भक्त ॥ जे सदान पावे नीत्य मुक्त ॥ ते हरी प्रि
ये सावत ॥ ज्ज्मा देवत पा श्वेद गणा ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ सुनंदन प्रच
व्वाहणा दीप्ती स्वपा र्शेद मुख्यः परी सेवितं विष्णुः ॥ सृत्य प्रसिदा
फी मुखं हगा सूचं पसन्न हासा सुण चारु लोचने ॥ ३८ ॥ टीका ॥ वैकं
ठिं हरी सक्त पूण ॥ ज्ज्मा देवता होए आपणा ॥ सांचि नावं सांगा
नैशके कोण ॥ मुख्य पा श्वेद गणा ॥ ते आयिका ॥ ३९ ॥ नंद सुनंद
मुख्य त्वं पूण ॥ बळ आणिं प्रचळ हण ॥ धात्रे विधात्रे नि कट

(6)

गण॥ जयविजयजाणः दारपाळ होनीं॥ ३५॥ चंड प्रचंड सुसीव ॥
 मड सु मड पुण्यशिख ॥ कु मू द कु मू दाक्ष स कळ ॥ हा पा भे द मे
 व्व हरीचा ॥ ४० ॥ ये हिं पा भे दी स म वेत ॥ अं ह्या दे खे श्री म ग वं त ॥
 साते म ज तां नि ज म क्त ॥ स्ना नं द यु क्त स र्व द ॥ ४१ ॥ स प्रेम स व्दा
 विं सा त्वि क ॥ सां सि स दा हरी स न्यु रव ॥ तु ट ला हो ने णे प्रा न्यु रव ॥
 नि ज्ञा नं दे सु रव स र्व दा हे तु ॥ म र्ग त्या चें द रु प ण अ ति श ये गो ड
 वि स र वि अ मृ ता चि चा ड ॥ पा हा त या चें पुरे को ड ॥ ह ष्ठी चि हो ए
 गो ड हे ख णे प णे ॥ ४२ ॥ नि ज म क्त वा ठा यिं ॥ ना म मात्र स्म र तां
 दे हिं ॥ मृ त्यु री घां न स के का हिं ॥ अ मृ त रु प या हिं या प री म क्त ॥ ४३ ॥
 ज्या चें ना मे नि वा रि ज न्म म र ण ॥ त्या चें सा ग्ये जा लि यां दे रु प ण ॥
 म क्त ॥ सि तो सु प्र स न्न ॥ प्र स न्त वं द न गो विं ड ॥ ४४ ॥ आ क ण

२३

२३

68

विशाळ नयन ॥ दोन्ही प्रांति आरक्त पुरा गथा ला गितो छरु ए लो
 चन ॥ चतुरान नहरी देखे ॥ ४६ ॥ श्लोक ॥ कीरटी नकुंडली नचतु
 पूजं पितांबरं वक्षसीळ स्थितं श्रीया ॥ अर्धहयासनमा द्वि
 तं परं वृत्तं चतुशोडशपंचशक्तिभिः ॥ १३ ॥ टीका ॥ मागुते नि के
 सातो फग वंतु ॥ निज पारये विधाता देखत ॥ मायां सुगुटरत्न
 खचित ॥ समनि संयुक्त ॥ जवत वधू ॥ ४७ ॥ चतु पूज घनसा
 वळा ॥ मकर कुंडले को स्तपगठां ॥ कै जयंति वसे वक्षस्वळा ॥
 अपाद वनमाळा परुळत ॥ ४८ ॥ चिडु शरण आलि हरी सी ॥
 अस्तु जाणो रवंडले तिसी ॥ तैसा पितांबरु कासे सी ॥ दिव्यतेजे
 सिंतळ पतु ॥ ४९ ॥ नाभी आवर्तला आनंद ॥ परमानंद वाढ
 ले दोंद ॥ सर्वो गें सच्चिदानंद ॥ स्वानंद कंद शोफतु ॥ ५० ॥ पाहा

४

ज

तां हरीचिंकरतव्ये ॥ संध्या रागु लाजीलापव्ये ॥ अधर आरक्त
 कोवव्ये ॥ सकुमार रातो तपव्ये ॥ तैसे चरणा ॥ ६१ ॥ चरणि तोडरु
 गजत देखा ॥ ध्वज वस्त्र अंकुश उर्ध्व रेखा ॥ पाहातां चरणि च्या
 सामुद्रिकां ॥ सनकादिकां स्वो नंद ॥ ६२ ॥ पडतां पांडं च्या पादोद
 कासि ॥ शंकर वोडविमस्तकादि ॥ तैरो शिचल आलं त्यासी ॥ अ
 द्यापिसी सिंवादानुरसे ॥ ६३ ॥ यत्रिण वक्षस्व छिं वामा ॥ वामां
 गि वैसु लिरमा ॥ तिचिया मया नि सीमा ॥ नवणी वेमहीमा ॥ श्रु
 तिशास्त्रे सिं ॥ ६४ ॥ रमा वैसतां विअर्धो गिं ॥ तिचिया निज श
 क्त अने गि ॥ उष्या तिष्ठ तिनिज चिपा गिं ॥ आज्ञा चिनयोगिं ॥
 अधीकार ॥ ६५ ॥ श्रेष्ठ सीं हां स निअ रोहणा ॥ रमा समवेतर

२४

२४

(88)

मारमण॥तेषं शृष्टिचकार्यकारण॥ब्रह्मा आपण स्वयं देखे॥६६॥
कराचया शृष्टि शृजन॥ब्रह्मयां पुढे श्री नारा एण॥शृष्टिचका
र्यकारण॥आपल्या आपण निज शक्तिदावि॥६७॥च्यारी पांच आ
णिसोळा॥ऐसा पंचे विसांचा येळा॥अज्ञा धार कुरु शिजवळा॥
विधाता डोळां स्वयं देखे॥६८॥याचि शक्तिकोण कोण॥कोण का
र्य कोण कार्बरण॥कैयं कैयत्यां लक्षण॥नामा श्री धान आ
यिका॥६९॥प्रहृति पुरुष महद॥हंकारु॥हाचतुराशक्तिचा
प्रकारु॥पंचशक्तिचा विचारु॥जाणसाचारु पंचमाहां सृते
॥६०॥ज्ञानकर्म दीयलक्षण॥अकरावे गणिजे मन॥पंच त
न्मात्रा विषय जाण॥या परीसंपुण शोडष शक्ति॥६१॥या पं
च विसांचा पोटां॥ब्रह्मांड सिं उठि शृष्टी॥साहि माजी त्रि

(8)

गुण त्रिपुटि ॥ अतर्क्या दृष्टी धि धाता देखे ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ युक्तं प्र
 गै स्वैरीतरत्रया च्छु वै भ्यपचरुपेर ममाण मी भ्यरं ॥ तद्दर्शन
 ल्लादपरीपुतातेरहृष्यतनु ॥ प्रेमसराश्रुलोचनाः ॥ १४ ॥ टीका ॥
 शङ्खुणा भाग्ये भाग्यवंतु ॥ यान्तागि वौलि जे मग वंतु ॥ ज्ञानचैरा
 ज्ये ए श्वर्ये वंतु ॥ एत्रा श्री मंतु उदो र्ये सी ॥ ६३ ॥ हे हि सा हि गुण
 मग वंति ॥ सहज स्वभा विव य सति ॥ योगि करीता ति मग व
 भक्ति ॥ षड्गुण प्राप्ति तत्पु र ॥ ६४ ॥ सहज षड्गुण मग वंती ॥
 योगियां आं गां तु क प्राप्ति ॥ मक्ता ते मग वंतु ल्प ण ति ॥ आद
 काया चि नाम कीर्ति ॥ संक्षेपं स्थिति सांगेन ॥ ६५ ॥ वशी ए वा
 म देव नारद ॥ व्यास बाल्मीक पु ल्लाड ॥ शुक सङ्गुणी पसी
 धू ॥ इत्यादि अनुवाड ॥ मग वदपे ॥ ६६ ॥ अगाध हरी चें उदार

२८

२८

88

पण॥ दासां दे उ नि ष ड्डु ल ॥ अ ग व ह प क री पु र्ण ॥ त्या सी सी म्भ
 प ण ने द र खे ॥ ६७ ॥ दे उ नी ष ड्डु ल सं प ति ॥ अ क्त म गे ह प हो ति ॥ च
 त्यां चि उ रां ने हि सी न्न वृ ति ॥ वि दा त्म स्थि ति नि ल बो धे ॥ ६८ ॥ न
 व ल स म र्था चं औ दा र्ये ॥ अ प ण र क ट दे ष ड्डु लो श्चै र्ये ॥ अ सी न्न
 ज्ञा न स ते ज वि र्ये ॥ मा हा म ही म ॥ ६९ ॥ म ड्डु नि ष क्तां चा जी व क ण ॥
 अ ह नी र सु नी दे ष ड्डु ल ॥ स्व यं स्व स्व रु पि र मार म ण ॥ स्वानं द
 पु र्ण पर मा त्मा ॥ ७० ॥ या प री श्री ना रा ण ॥ आ नं द वि ग्र ही चि
 हु न ॥ त्या तं दे खो नि च तु रा न न ॥ अ स म र्ये पु र्णो डो षो लो गे ॥ ७१ ॥
 अ च क री दे खि ला रु पि केशी ॥ अ च क री स त्वा ट लं त्या सि ॥ प्रे म न
 स्व रे ब्रं ह्म यां सी ॥ सु खो मी सीं चि क्क ळ ॥ ७२ ॥ अ च अ च वित श्या
 म सुं द र ॥ दे ख तां म ना सि म ना चा चि स रु ॥ च ट ला सु र वा चा

माहापुरा ॥ सामाजीसंसार ॥ बूडोंपाहे ॥ ७३ ॥ चित्तचित्तेंले विस्तरले ॥
 अहंसाहंएकजालें ॥ बुधीबोधोखेवंपडीले ॥ मरीतेंदाटलेस
 लाचें ॥ ७४ ॥ निजात्मजोतिलुखलविलि ॥ तेषांहरिखेंजीवद
 शालाजीलि ॥ देहींदेहत्याचिस्फूर्तिगेलि ॥ विषयशांतिचि
 जालिपाहाणिपाहाट ॥ ७५ ॥ मोडतत्रिपुटिचेंविंदाण ॥ माळ
 वोंलागेविकारमरण ॥ जीवशाचाहोपाहेलग्न ॥ तेमधूपक
 चिधान ॥ शुधेतेनहि ॥ ७६ ॥ अरुह्यपाअरुणोदयोहोत ॥ अ
 नानआंधारेंजाएतेथादेदियविषयेनीडायुक्त ॥ तेंउठों
 पाहातनीजबोधें ॥ ७७ ॥ कंठिअतिबाषदाटला ॥ तेषांशह
 वेकारुखुंटाळा ॥ गदगडुनिरोमांचीतुजाला ॥ सर्वांगिचाली
 लाखेदकेपु ॥ ७८ ॥ अंतरीहरुषकांधाटोनि ॥ आनंदाशृ

७

केले
२६

२६

98

लोटलेनयनि॥ फुंदेसुखोर्मिचास्पुंदनि॥ विक्कळो निविधाता ॥
 ॥७५॥ तेसत्वावस्था आचरुनि॥ आंतिस्वेदपरमाडुनि॥ ब्रंजाह
 उनि सावधान॥ वदि श्रीचरणानाराणाचे॥ ८०॥ श्लोक॥ नना
 मवादांबुजमस्य विश्वेवयासारहं येन यथावीधीगम्यातो ॥
 तप्रियमाणं समुत्थितं तदायत्नो वीसर्गे नीजशासनाहं ॥१५॥
 टीका॥ जें परमहंसप्रान्जळें॥ योगवेशयज्ञानबुळें॥ पावतिहरीचिं
 पादयुगुळें॥ तें चरणकमळें वंदिलिं॥ ८१॥ जे वेदविवेकवित्यति ॥
 जाणो निसर्गवें प्रतिकरीति॥ तें प्रगवंत चरणपावति॥ ते चरण
 प्रजापतिवंदीताजला॥ ८२॥ हरीचरणहंदयुगुळें॥ चंदीतां चि
 भावबळें॥ निहंद करीतितकाळें॥ तें चरणकमळें वंदिलिं
 ॥८३॥ हरीचरणपदहंद॥ वंदीतां करीनिहंद॥ यालागि श्रेष्ठा



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com